स्त्री दुनिया
समसामयिक सरोकार

संपादक
रेखा रानी

सहसंपादक
प्रियदर्शिनी

CamScanner

स्त्री दुनिया : समसामयिक सरोकार

संपादक
रेखा रानी
सहसंपादक
प्रियदर्शिनी

स्वराज प्रकाशन

CamScanner

मुख्य कार्यालय

स्वराज प्रकाशन

4648/1, 21-अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 011-23289915
Email : swaraj_prakashan@yahoo.co.in

शाखा

288, ई.डब्ल्यू.एस., शास्त्रीपुरम
आगरा-282007 (उ.प्र.)

© रेखा रानी एवं प्रियदर्शिनी

मूल्य : ₹ 695
प्रथम संस्करण : 2019
ISBN : 978-93-88891-55-4

अजय मिश्रा द्वारा **स्वराज प्रकाशन**, 4648/1, 21, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा ओम आफसेट, जगतपुरी
शाहदरा, दिल्ली-110093 में मुद्रित

CamScanner

अनुक्रम

महिला पत्रिकाओं में स्त्री अस्मिता का स्वरूप और भाषिक संरचना	डॉ. रिंकू घोष	13
उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी समस्या-नॉस्टेल्जिया के विशेष संदर्भ में	डॉ. हर्षलता शाह	20
समकालीन कवयित्रियों के मिथक तथा इतिहास संदर्भ	प्रो. पद्मा पाटिल	25
स्त्री : बढ़ती आर्थिक आत्मनिर्भरता-बढ़ते खतरे	डॉ. शिखा कौशिक	40
महिला कथा लेखन में स्त्री : चेतना की नई अवधारणा	डॉ. रमा पद्मजा	44
बदलाव के लिए सशक्त बनें : कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न	डॉ. साएमावानो	47
स्त्री अस्मिता बॉडी और ब्रेन के बीच	विनीता रघुवंशी	54
आज के दौर का स्त्री लेखन	कलावंती	57
तलाक की प्रासंगिकता	हुस्न तबस्सुम निहाँ	60
यौन उत्पीड़न और राजनीतिक व्यवस्था : एक विश्लेषण	डॉ. शुभी धुसिया	65
स्त्रियों के उत्थान में डॉ. अम्बेडकर का योगदान	डॉ. सुशीला टाकभौरे	69
स्त्री संघर्ष के जरूरी सवाल : अनामिका तथा मैत्रेयी पुष्पा का विमर्शात्मक लेखन	डॉ. अर्चना त्रिपाठी	77
लोकसाहित्य और दलित आदिवासी स्त्री की अभिव्यक्ति	किंग्सन अनिता भारती	84
स्त्री अधिकारों का संघर्ष : भारतीय संदर्भ	डॉ. किगंसन सिंह पटेल	94
उर्दू साहित्य में नारीवादी चिन्तन	प्रो. वसीम बेगम	101
स्त्री आत्मकथा और प्रेम	डॉ. गायत्री सिंह	107
रवीन्द्रनाथ की कहानी–'पत्नी का पत्र' : स्त्री की सच्ची पहचान	डॉ. ज्योति सिंह	113
महाकाव्य 'साकेत' में कैकेयी का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण	डॉ. रेखा सिन्हा	118
आदिवासी कविता में व्यक्त विद्रोह	डॉ. सविता उके	122
तेलुगु की पहली पीढ़ी की दलित स्त्री रचनाकार : जीवन और काव्य	डॉ. मायादेवी	130
प्रवासी साहित्य में भारतीय स्त्री	डॉ. राजश्री पी. मोरे	137
बुरा होता है सच्चाई को गलत ढंग से छिपाना	डॉ. रजनी दिसोदिया	140
वह सुबह कहीं से आएगी...	डॉ. निखिला एच.	148
कामकाजी स्त्री और समाज	डॉ. रजनी बाला	155
'अपनी जमीं अपना आसमाँ' के बहाने-दलित आत्मकथाओं पर एक नजर	डॉ. रजत रानी मीनू	158

CamScanner

अनुक्रम

महिला पत्रिकाओं में स्त्री अस्मिता का स्वरूप और भाषिक संरचना	डॉ. रिंकू घोष	13
उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी समस्या-नॉस्टेल्जिया के विशेष संदर्भ में	डॉ. हर्षलता शाह	20
समकालीन कवयित्रियों के मिथक तथा इतिहास संदर्भ	प्रो. पद्मा पाटिल	25
स्त्री : बढ़ती आर्थिक आत्मनिर्भरता-बढ़ते खतरे	डॉ. शिखा कौशिक	40
महिला कथा लेखन में स्त्री : चेतना की नई अवधारणा	डॉ. रमा पद्मजा	44
बदलाव के लिए सशक्त बनें : कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न	डॉ. साएमाबानो	47
स्त्री अस्मिता बॉडी और ब्रेन के बीच	विनीता रघुवंशी	54
आज के दौर का स्त्री लेखन	कलावंती	57
तलाक की प्रासंगिकता	हुस्न तबस्सुम निहाँ	60
यौन उत्पीड़न और राजनीतिक व्यवस्था : एक विश्लेषण	डॉ. शुभी धुसिया	65
स्त्रियों के उत्थान में डॉ. अम्बेडकर का योगदान	डॉ. सुशीला टाकभौरे	69
स्त्री संघर्ष के जरूरी सवाल : अनामिका तथा मैत्रेयी पुष्पा का विमर्शात्मक लेखन	डॉ. अर्चना त्रिपाठी	77
लोकसाहित्य और दलित आदिवासी स्त्री की अभिव्यक्ति	किंग्सन अनिता भारती	84
स्त्री अधिकारों का संघर्ष : भारतीय संदर्भ	डॉ. किगंसन सिंह पटेल	94
उर्दू साहित्य में नारीवारी चिन्तन	प्रो. वसीम बेगम	101
स्त्री आत्मकथा और प्रेम	डॉ. गायत्री सिंह	107
रवीन्द्रनाथ की कहानी–'पत्नी का पत्र' : स्त्री की सच्ची पहचान	डॉ. ज्योति सिंह	113
महाकाव्य 'साकेत' में कैकेयी का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण	डॉ. रेखा सिन्हा	118
आदिवासी कविता में व्यक्त विद्रोह	डॉ. सविता उके	122
तेलुगु की पहली पीढ़ी की दलित स्त्री रचनाकार : जीवन और काव्य	डॉ. मायादेवी	130
प्रवासी साहित्य में भारतीय स्त्री	डॉ. राजश्री पी. मोरे	137
बुरा होता है सच्चाई को गलत ढंग से छिपाना	डॉ. रजनी दिसोदिया	140
वह सुबह महीं से आएगी...	डॉ. निखिला एच.	148
कामकाजी स्त्री और समाज	डॉ. रजनी बाला	155
'अपनी जमी अपना आसमाँ' के बहाने-दलित आत्मकथाओं पर एक नजर	डॉ. रजत रानी मीनू	158

CamScanner

बदलाव के लिए सशक्त बनें : कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न

–डॉ. साएमाबानो

वर्जीनियावुल्फ अपनी पुस्तक एरुम ऑफ वंसओन में कहती हैं कालपनिक रूप से उसका (नारी का) महत्त्व सर्वोच्च होता है, व्यावहारिक रूप से वह सर्वथा महत्त्वहीन है। कविता में पृष्ठ-दर-पृष्ठ में वह व्याप्त है। इतिहास में वह अनुपस्थित है। कथासाहित्य में वह राजाओं विजेताओं की जिंदगी में राज करती है। वास्तविकता में वह किसी पुरुष की गुलामी करती है, जिसके माँ-बाप उसकी ऊँगली में एक अंगूठी ठूंस देते हैं। साहित्य में कुछ अत्यंत प्रेरक शब्द कुछ अत्यंत गंभीर विचार उसके होठों से झरते हैं। असली जिन्दगी में वह कठिनाई से पढ़ सकती है, कठिनाई से बोल सकती है और अपने पति की संपत्ति है।"

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2017 के थीम 'बदलाव के लिए सशक्त बनें' (Be Bold For Change) से बात आरंभ की जाए तो ज्यादा तर्कसंगत होगी। वर्तमान समयतीव्र परिवर्तनों का समय है। हर साल, हर महीने, हर हफ्ते यहाँ तक कि हर रोज, विश्व में नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं। प्रत्येक स्तर पर, प्रत्येक स्थान पर, प्रत्येक स्थिति में आज का मनुष्य इन परिवर्तनों के साथ आगे बढ़ रहा है। आज इन सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तनों को अपनी विवेकशीलता और समझ की कसौटी पर परखते हुए आगे बढ़ना आवश्यक हो गया है स्त्री और पुरुष दोनों के लिए। स्त्री की चुनौतियाँ अपेक्षाकृत अधिक इसलिए हैं क्योंकि सदियों तक उसे मुख्य धारा में शामिल ही नहीं होने दिया गया। ऐसे में समय के साथ चलने और उसे बदलने के लिए आज की नारी को सशक्त होना ही होगा। अपनी हर तरह की जिम्मेदारियों के साथ, घर में भी और घर की दहलीज के बाहर भी।

नारी नाम है, ईश्वर की अद्‌भुद कल्पना का, जीवन में प्रवाहित स्नेह की निर्मल-स्निग्ध धारा का। नारी, नाम है ममता का, दया का, त्याग का, तपस्या का, क्षमा, श्रद्धा और समर्पण का। यानी जो नारी प्रेम, उल्लास और भक्ति की स्रोतस्विनी है, वही नारी शक्ति और साहस की पराकाष्ठ की प्रतीक भी है किन्तु इस ज्वलंत प्रश्न से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि प्रायः समाज ने उसे या तो देवी बनाकर पूज लिया है या दासी बनाकर अपना अधिकार जमाते हुए प्रताड़ित किया है। क्या नारी को कभी मनुष्य भी समझा गया? उसकी कमियों-कमजोरियों को, उसकी आशा-आकांक्षाओं को, संघर्षों को, द्वंद्वों को, भावनाओं को, आंसुओं को, इच्छाओं-अनिच्छाओं को मानवीय रूप में कभी स्वीकार किया गया? क्या उसे कभी मनुष्य होने के अधिकार दिए गए? उसमें यदि दैवीय गुण प्रतिष्ठापित किये गए हैं, तो उसके मानवीय गुणों की अवहेलना क्यों की गयी है? आज साहित्य हो या जीवन सम्पूर्ण स्त्री-विमर्श का औचित्य नारी के मानवीय अधिकारों की रक्षा

CamScanner